336 (Р)
Н (52)

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1305/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 336

D / 1811

891.431
N 131 C

RECEIVED
14 DEC. 1931

॥ बन्दे मातरम् ॥

चमकते सितारे

देश की मांगों को ठुकरा दीने सिंह फांसी चढ़ा।
राज अब बरतानिया का हिन्द से जाने को है॥
हो चुका लबरेज़ प्याला "नागर" इनके ज़ुल्म का।
तख़्ते दुनियाँ से ये राज्य मिट जाने को है।

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक
पं० राजाराम नागर "नागर"
प्रयाग।

मुद्रक
रामअधार यादव,
यूनियन जाब प्रेस, कटरा, प्रयाग।

प्रथमवार] सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन [मूल्य -)

नक़ली गोलमेज़

नहीं होते हैं दो दिल एक आता फ़र्क़ जब दिल में ।
सुलह होते नहीं देखी कभी बिस्मिल व क़ातिल में ॥
कभी दाना समझ कर जो जगह देते थे महफ़िल में ।
वही हमको मिलाना चाहते अब ख़ाक़ मट्टी में ॥
जहाँ सुनता नहीं फरियाद तक अपनी दिली कोई ।
भला क्या दास्ता जाकर सुनायें राउन्ड टेबिल में ॥
बताया माह नव पहले था हमको शेर जवाहर ने ।
न जाना भूल कर भी तुम कभी उस राउन्ड टेबिल में ॥
वही बख्शेगा आज़ादी ख़ुदा जो सबका आक़ा है ।
कि जिसकी रोशनी से रोशनी है आंख की तिल में ॥
न धोखे से उधर जाना जिधर बस्ती लुटेरों की ।
हज़ारों क़ाफ़िले लूटे गये हैं ऐसी मंज़िल में ॥
भला कब छोड़ता जल्लाद है फरियाद करने से ।
कहीं काफ़ूर की खुशबू हुई पैदा है फिल फिल में ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 336
Date 7-12-71
GOVT. OF INDIA

चमकते सितारे

बलिदान भगतसिंह

हम बीरों का दिलदार था सरदार भगतसिंह।
दुश्मन के लिये ख़ञ्जर की था धार भगतसिंह॥
बाँका था वीर लड़ाका था औ शेरे बबर दिल।
फिर हुस्न का था एक ही बाज़ार भगतसिंह॥
धीरों में वीर राजगुरु सुखदेव भी रहे।
था क्रान्ति का सच्चा सिपहसालार भगतसिंह॥
थानों में लाल पर्चा बेख़ौफ़ लगाता।
पर गांधी के कहने से हुआ लाचार भगतसिंह॥
बम केस में पकड़ा गया हाकिम से कहा यूँ।
मरने को सीना खोल खड़ा सरदार भगतसिंह॥
गोली से उड़ादो मगर फांसी न लगाओ।
फांसी से ही लाचार है सरदार भगतसिंह॥
उन हाकिमों ने शेर की फरियाद न सुनी।
कर लिया फांसी गले का हार भगतसिंह॥

भगत सिंह की राष्ट्रभक्ती

शेर दिल वह वीर आज़ादी का मस्ताना मेरा ।
हंसते हंसते चढ़ गया फांसी पै दीवाना मेरा ॥
प्राण पर भी खेल कर अभिमान रक्खा देश का ।
ज़ालिमाना ज़ुल्म से हा वह न घबराना मेरा ॥
हर नसों में चल रही थी देश सेवा की लहर ।
वह ज़नाना था नहीं निर्भीक मरदाना मेरा ॥
कर्मयोगी थे वे तीनों बन्धु त्रय भोगी न थे ।
सत्तपस्वी वीर बाना हिन्द का राणा मेरा ॥
साथ ही फांसी पै लटका उफ़ नहीं लाया तनिक ।
साथ गुरु सुखदेव का तख़्ते पै इतराना मेरा ॥
धन्य वह जल्लाद था वह भूमि भी धन धन्य थी ।
धन्य वो माता पिता का पुत्र जनमाना मेरा ॥
न्याय भी वह धन्य था जो कुछ न सुनवाई हुई ।
"क्रौस" तक होने न पाया शोक कट जाना मेरा ॥
देह नश्वर जल गया दरियाये सतलज तीर पर ।
रह गया आख़िर जहाँ में ज़िन्दा अफ़साना मेरा ॥
ख़ून उसका बह चला जब ही था तख़्ते मर्ग से ।
चह चहा कुमरी उठीं सुनकर "ललित" गाना मेरा ॥
त्याग उसका सीखना ग़ैरों को सिखलाना ज़रा ।
वीर युवको आन पर मर मर के मिट जाना मेरा ॥

शहीदों की लाशें ?

(लेखक मुंशी 'अनूपचंद आफ़ताब' पानीपती)

हम दोश पे लाशों को उठाने भी न पाये ।
हम फूल शहीदों पर चढ़ाने भी न पाये ॥
हम अश्क चिताओं पै गिराने भी न पाये ।
हम आतिशे सोज़ाँ को बुझाने भी न पाये ॥
दर्दे दिले मजनूँ को मिटाने भी पाये ।
माँ बाप कलेजे से लगाने भी न पाये ॥
जाँ बाज़ों ने दम तोड़ दिया कुंजे क़फ़स में ।
वह आख़िरी पैग़ाम सुनाने भी न पाये ।
बेताब थे वह सोगये आग़ोशे अजल में ॥
जो उन पै गुज़रती थी सुनाने भी न पाये ।
सद हैफ़ रही आरज़ू यह दिल में हमारे ॥
लाशों को शहीदों की जलाने भी न पाये ।

—:०:—

ग़ज़ल

छिपा है कहाँ जाके प्यारा भगतसिंह ।
था आलम के आँखों का तारा भगतसिंह ॥
बहुत नाम रोशन किया है जहाँ में ।
कि चमका है बनकर सितारा भगतसिंह ॥
तूने भारत चमन को है सींचा लहू से ।
कहाँ जा बसा हो के न्यारा भगतसिंह ॥
अजी देश हित के लिये जान दे दी ।
बढ़ी शान तेरी हमारा भगतसिंह ॥

नौजवानों के हेतु हुये आप गांधी।
रहे राष्ट्र के एक गुबारा भगतसिंह॥
बुरा हाल है देश भारत का ऐ 'लाल'।
होवै जन्म तेरा दुबारा भगतसिंह॥

—:o:—

करांची कांग्रेस में शहीदों की रूह

तड़पा दिया सारी जाती को इन फांसी पाने वालों ने।
नामूँ से वतन के ख़ातिर अपना ख़ून बहाने वालों ने॥
मशरिक़ से लेकर मग़रिब तक है ज़िक्र कज़ाओं में उनका।
हर एक के दिल को मोह लिया इन फांसी पाने वालों ने॥
सतलज के किनारे लिखा है यह उनके ख़ून के क़तरों से।
हम जल न सके गो लाख जलाया हमको जलाने वालों ने॥
जो चोट लगी है मालवी को मज़हर में उनके अश्क उनके।
अफसोस न देखा आंसू को हंगामा मचाने वालों ने॥
गांधी के जिगर से पूछियेगा सदमा उसे कितना पहुँचा है।
सोची न अच्छाई बुराई उन पर हाथ उठाने वालों ने॥
जो रंज हुआ है जवाहर को क्या हो सके उसका अंदाजा।
हर एक को गरज़ बेहाल किया जान अपनी लुटाने वालों ने॥
सुखदेव भगतसिंह राजगुरु तीनों थे करांची में मौजूद।
यह हाल सुनाये मुझको वहां से वापिस आने वालों ने॥

—:o:—

मर्दाना भगतसिंह

ऐ भगतसिंह आज तू दुनिया से न्यारा होगया।
हाय सूना अबतो यह संसार सारा होगया॥

था महीना मार्च का तारीख़ थी तेईसवीं।
सात बजते ही वतन का गुल सितारा होगया॥

राजगुरु सुखदेव भी देकर गये रंजो अलम।
हाय भारतवर्ष मेरा बे सहारा होगया॥

एक तो दिल पर जमा था ग़म मुझे आज़ाद का।
तेरे जाते ही भगतसिंह ग़म दुबारा होगया॥

अब किताबों में फ़क़त तेरी ही कहानी रह गई।
दूर आँखों से मेरा वह गुलहजारा होगया॥

आबे हस्ती पै छाई गम की यह कैसी घटा।
दूर गोदी से कि जब भारत का प्यारा होगया॥

शैर

ऐ पिता हम बेगुनाह हिन्दी ये करते हैं दुआ।
हिन्द से जालिम हुकूमत का निशां जल्दी मिटा॥

राष्ट्रीय कजली

प्रीतम चलूँ तुम्हारे संग जंग में पकड़ूँगी तलवार।
भारत को आज़ाद करूँगी नहीं जेल से बलम डरूँगी॥
मारूँगी और वहीं मरूँगी करूँ नमक तैयार॥ प्रीतम० ॥

चरखे की मैं तोप बनाऊँ बना सूत के गोले चलाऊँ।
मैनचेस्टर के क़िले को ढाऊँ पाऊँ फतह भरतार॥ प्रीतम० ॥

गांधी जी का हुक्म बजाऊँ घर घर में उपदेश सुनाऊँ।
अपनी बहनों को समझाऊँ करूँ ख़ूब प्रचार॥ प्रीतम० ॥

नहीं पीछे को क़दम हटाऊँ नहीं माता का दूध लजाऊँ।
भारत रमणी हुनर दिखाऊँ कस पांचो हथियार॥ प्रीतम० ॥

अपना पहनूँ कता स्वदेशी नहीं ख़रीदूँ माल विदेशी।
सुलह करेंगे तब गोरे जब होय गरम बाज़ार॥ प्रीतम० ॥

गाढ़े का जब कपड़ा बनाऊँ सारी पब्लिक को पहनाऊँ।
और करदूँ ढ़ेरी सूत त्यार ॥ प्रीतम० ॥